Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

सिने राजनीति - 18 वीं लोकसभा चुनाव के संदर्भ में

लेखराज वर्मा
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, ब्यावर, राजस्थान

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 44-49
Publication Issue :
March-April-2025
Article History
Accepted : 10 March 2025
Published : 25 March 2025

शोध सार - सिने राजनीति, जिसके अन्तर्गत फिल्मी जगत से सम्बंध रखने वाले व्यक्ति चुनाव में समाजसेवा, अपने ग्लैमरपूर्ण व्यक्तित्व, फिल्मों में काम न मिलने के बाद के समय को गुजारने के लिए चुनाव का रूख कर लेते हैं व अपनी आर्कषक छवि के कारण प्रभावी चुनावी व्यक्तित्व को भी हराकर चुनाव जीत जाते है। कुछेक सफलतापूर्वक कार्य करते है अधिकतर निष्क्रिय रहकर राजनीति से बाहर हो जाते है या कर दिये जाते है। 18वीं लोकसभा के चुनाव में भी प्रत्येक राजनीतिक दल ने फिल्मी सितारों को मैदान में लाकर चुनावी सीट पर कब्जा करने का प्रयास किया है।सम्बंधित शोध आलेख इसी पर किया गया विश्लेषण है।

की वर्ड - सिने राजनीति, ग्लैमरपूर्ण व्यक्तित्व,जीताऊं उम्मीदवार,रोल माडल ।

शोध आलेख -

सिने राजनीति, वह राजनीतिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सिनेमा से सम्बंध रखने वाले कलाकार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में अपनी भूमिका का निष्पादन करते है। वर्तमान चुनावी राजनीति में इसे काफी सक्रियता से देखा जा सकता है। राजनीतिक दलो का मानना है कि सिने कलाकार अपने व्यक्तित्व, ग्लैमर व रोमांटिक छवि के माध्यम से जनता को आसानी से प्रभावित कर सकते है व राजनीतिक दलो को चुनाव में जीत प्रदान कर सकते है, दल का जनाधार बढ़ा सकते है। चुनावी राजनीति में यह नुस्खा काफी कारगर भी सिद्ध हुआ है। इसका प्रारम्भ अमरीकी राष्ट्रपति के पूर्व चुनावों से हुआ देखा जा सकता है, अमेरिकी सिने कलाकार रोनाल्ड रीगन ने चुनाव जीतकर वहां की राजनीति को अपने प्रभाव व कार्यों से उच्चता प्रदान की। भारत के चुनावों में सिने कलाकारों का चुनावी राजनीति में प्रवेश दक्षिण के सिने अभिनेताओ के साथ शुरू हुआ सामने आया है जिसमें एन.टी.रामाराव,सी.एन. अन्नादुराई, जानकी रामचन्द्रन, एम.जी.रामचन्द्रन, जे.जयललिता जैसे कलाकरों की भूमिका रही है। भारत के उत्तर, पश्चिम, पूर्व क्षैत्र में इसका विकास कुछ समय बाद में हुआ जिसमें सुनील दत्त, शत्रुध्न सिंहा, विनोद खन्ना, राजेश खन्ना इसके हिस्सेदार रहे हैं। जिन्होने चुनावी राजनीति के पश्चात भी सक्रिय राजनीति में भागीदारी निभाते हुए दल, सरकार, सता, व जनसेवा में अपना योगदान दिया है। [i]

18 वीं लोकसभा के चुनावों पर एक नजर डालने पर स्पष्ट होता है कि इस चुनाव में फिर फिल्मी सितारों से जगमग है चुनावी मैदान है। 2 राजनीतिक दलों ने निम्न कारणों से इनको अपना उम्मीदवार बनाकर इनकी भागीदारी सुनिश्चित की। इसके निम्न कारण स्पष्ट होते है -

प्रथम - यह कि कुछ संसदीय क्षैत्रों में गुटबंदी, दलीय कार्येकत्ताओं की निष्क्रियता के कारण नेतृत्व का संकट था ऐसे में विपक्षी दलों से ज्यादा प्रभाव प्रदर्शित करने व जीताऊं उम्मीदवार की सोच के कारण अवसर प्रदान किया गया।

दूसरा - कुछ राजनीतिक दलो में ऐसे उम्मीदवार नहीं थे जिनकी अपील अपने क्षैत्र में प्रभावी हों जबकि अभिनेताओं की अपील सुनने वालों का एक विशेष वर्ग था ऐसे में अवसर मिला।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

तीसरा - सिने अभिनेताओं की ग्लैमर छवि के कारण आमजन में वे रोल मा ॅडल व आदर्शवादी के रूप पहचाने जाते है। इसी छवि के कारण अभिनेता भीड़ जुटाने व जनता तक दलीय विचार पहुचाने में सक्षम होते है।

चतुर्थ - सिने कलाकार आर्थिक रूप से सक्षम होते है अतः अपनी छवि के लिए वह चुनावी खर्च को आसानी से वहन कर सकते है।

पंचम् - कुछ सिने कलाकार राजनीति में इच्छा रखते है, राजनीति के माध्यम से जनसेवा करना चाहते है, सिनेमा में उपेक्षा के कारण नया केरियर बनाना चाहते है।

उपर्युक्त कारणों के आधार पर राजनीतिक दलों ने सिने कलाकारों को जगह देकर इस चुनाव को पुर्व चुनावों की भांति रंगीन बना दिया।

राजनीति के मैदान में फिल्म कलाकारों की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है. 2019 के लोकसभा चुनावों में भी फिल्म कलाकारों को खासी सफलता मिली थी. तब 15 से ज्यादा कलाकार चुनाव जीतकर संसद पहुंचे थे. इनमें भी सबसे ज्यादा नौ सांसद बीजेपी और चार सांसद तृणमूल कांग्रेस के थे. वहीं, एक अभिनेत्री ने निर्दलीय लड़कर भी जीत दर्ज की थी।[ii] 2024 के लोकसभा चुनाव में देश के प्रमुख दलों ने लगभग 20 फिल्म कलाकारों और गायकों को मैदान में उतारा है. इनमें हेमा मालिनी और शत्रुघ्न सिन्हा जैसे वरिष्ठ कलाकारों से लेकर कंगना रनौत जैसी युवा अभिनेत्री शामिल हैं.ं। सितारों पर दांव खेलने में बीजेपी सबसे आगे है। उसने 12 कलाकारों पर भरोसा जताया है. दूसरे नंबर पर तृणमूल कांग्रेस है, जिसने पांच कलाकारों को टिकट दिया है.। इन चुनावों में मुख्यतः सभी राजनीतिक दलो ने सिने कलाकारों को उम्मीदवारी प्रदान की।[iii]

कंगना रनौत - [1] मण्डी (हिमाचल प्रदेश) संसदीय क्षेत्र से मार्च 2024 में बीजेपी की प्रत्याशी बनाई गई। जून 2024 में हुए चुनाव में विक्रमादित्य को 74755 मतो से हराकर सांसद बनी। बेबाक बयानबाजी व हिन्दूवादी विचारधारा पर खुलकर बोलने के कारण बीजेपी ने उन्हे पसन्द किया। सोशल मीड़िया पर तीखी बयानबाजी करने, महाराष्ट्र शिवसेना के खिलाफ आक्रामक रहने के कारण, नेपोटिज्म पर खुलकर बोलने के कारण उन्होने अपना एक विशेष वर्ग तैयार कर लिया और राजनीति में सफलता के रूप में अपने को स्थापित कर पाई।[iv] ,

हेमामालिनी - मथुरा लोकसभा से इस बार भी कांग्रेस के मुकेश धीनगर को 293407 मतो से हराकर सांसद निर्वाचित हुई। यह उनका मथुरा संसदीय क्षैत्र से तीसरा चुनाव था और जीनों में ही वह विजय रही है । 2014 में मथुरा से आरएलडी के जयन्त चैधरी को 330743 मतो से हराकर प्रथम बार निर्वाचित हुई। 2019 में 293471 मतों से विजय प्राप्त की। हेमामालिनी 1999 से ही राजनीति में सक्रिय रही है इस समय उन्होने भाजपा उम्मीदवार विनोद खन्ना के लिए प्रचार किया था। 2003 से 2009 के लिए वह राज्यसभा के लिए नामित की गई थी। बीजेपी में वह 2004 में आई 2010 में उन्हे पार्टी का महासचिव बनाया गया। संसद में उनकी सक्रियता कम रहने के पश्चात भी वह हर समय संसदीय क्षैत्र, राष्ट्रीय राजनीति व दलीय नेतृत्व के रूप में जनता के मध्य में रही। सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत हेमा मालिनी ने 2019 से 2024 के बीच छह ग्राम पंचायतें गोद लीं. इनमें से पांच में करीब 150 विकास कार्य कराए। उनकी यह सक्रियता ही राजनीतिक सफलता के रूप में सामने आई।[v]

शत्रुध्न सिन्हा - आसनसोल (पं. बंगाल) लोकसभा सीट से तृणमूल कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़कर बीजेपी के उम्मीदवार एस.एस. आहलूवालिया को 59564 मतों से हराकर सांसद बने। सिन्हा ने राजनीति में प्रारम्भ से ही अपनी प्रभावी भाषा से जनता में पकड़ बनाये रखी है। उन्होने 1992 में नई दिल्ली लोकसभा सीट से राजेश खन्ना के विरूद्व चुनाव लड़कर राजनीति में प्रवेश किया। हालांकि यह चुनाव वह हार गये थे। इसके पश्चात 1996 से 2002 व 2002 से 2008 तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे। इस अवधि में उन्होने स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय व संस्कृति और कला विभाग मंत्री के रूप में सक्रियता से कार्य किया। 2009 से 2014 और 2014 से 2019 तक बिहार के पटना साहिब से सांसद बने रहे। अप्रेल 2019 में कांग्रेस में शामिल हो गये इसमें उनकी

1

कार्यशैली निष्क्रिय ही नजर आई। मार्च 2022 में तुणमूल कांग्रेस के सदस्य बनकर पश्चिमी बंगाल के आसनपोल उपचुनाव जीता। अभी इसी से क्षैत्र से सांसद है। संसद में उन्होने पिछले कार्यकाल में किसी तरह से सक्रियता नहीं दिखाई नहीं सांसद निधि को खर्च करने में दिलचस्पी दिखाई। लेकिन सिन्हा का फिल्मी ग्लैम्रपूर्ण व्यक्तित्व व उनके बोलने की दक्षता चुनाव जीता ही देता है। अपने इस व्यक्तित्व से वे जनमानस में पकड़ बनाकर रखतें जिससे सफलता मिल जाती है।[vi]

मनोज तिवारी - नॉर्थ-ईस्ट दिल्ली क्षैत्र से मनोज तिवारी ने कांगे्रस के कन्हैया कुमार को 138778 मतो से हराकर सांसदी प्राप्त की है। उनका कैरियर 2009 में समाजवादी नेता के रूप शुरू हुआ और उन्होने गोरखपुर लोकसभा सीट से आदित्यनाथ के विरूद्व चुनाव लड़ा लेकिन पराजय हाथ लगी। इसके पश्चात भी संघर्ष जारी रखा 2011 में भारतीय भ्रष्टाचार विरोध किया। 2014 में भाजपा में शामिल होकर दिल्ल्ी का चुनाव जीता । जिसका परिणाम 2016 में दिल्ली भाजपा अध्यक्ष पद पर नियुक्ति मिली। उनका संघर्ष जारी रहा और 2017 में दिल्ल्ी एमसीडी के चुनावों में पार्टी को बडी सफलता दिलाई । 2019 में दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को लगभग 3 लाख वोटो से हराकर विजय प्राप्त की यह उनके संघर्ष का ही परिणाम था। पिछले सत्रों में संसद में उनकी 100 फीसदी उपस्थिति रही. उन्होंने ईको-टूरिज्म, यमुना नदी में प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से जुड़े सवाल भी पूछे। हालाकि उन्होने सांसद निधि का पूरा उपयोग (2.7 करोड़ रुपए खर्च ही नहीं किए) नहीं किया। फिज्मो की अपेक्षा रामलीला में अभिनय करके जनता में अपना प्रभाव बनाये रखा गया । तिवारी की पार्टी के प्रति दृढता व कर्मठता ने उन्हे सफल राजनीतिज्ञ बना दिया।[vii]

रवि किशन - गोरखपुर लोकसभा क्षैत्र से कंाग्रेस प्रत्याशी काजल निषाद जोकि फिल्म अभिनेत्री है वर्तमान में समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी थी को 103526 वोटो से हराकर सांसदी हासिल की। रविकिशन 2014 के आमचुनाव में जौनपुर (उत्तरप्रदेश) संसदीय क्षैत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी बने लेकिन पराजित हुये। 2019 में बीजेपी में शामिल होकर गोरखपुर से प्रत्याशी बनकर विजय हुएं। रवि किशन का फिल्मी करियर भी खूब परवान चढ़ा. आईएमडीबी के मुताबिक, रवि किशन इस दौरान 30 से ज्यादा फिल्मों और वेब सीरीज का हिस्सा रहे. जिसके कारण वह अपने स्टारडम को राजनीति में भुनाने में सक्षम रहे। उनका संघर्ष राजनीति में भी नजर आया। उन्होने पिछले सत्र में सबसे ज्यादा 480 सवाल पूछे और 10 निजी बिल पेश किए। यह उनकी राजनीति के प्रति सक्रियता का ही परिणाम हैं।[viii]

सुरेश गोपी - त्रिशूर (केरल) संसदीय क्षैत्र से माक्र्सवादी कम्यूनिष्ट पार्टी के बी.एस.सुनील कुमार को 74686 मतो से हराकर संासदी प्राप्त की। गोपी अभिनेता व गायक के साथ साथ पूर्व में सक्रिय राजनीतिज्ञ भी रह चुके है। काॅलेज समय में भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के सक्रिय सदस्य रहे। केरल में विधानसभा चुनावों में प्रचार करके राजनीतिक सक्रियता दिखाई। 2016 में राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा के नामित सदस्य बने व संचार व सूचना मंत्रालय, नारियल विकास बोर्ड,जनजातीय मामलात की समिति में कार्य किया। उनके राजनीतिक अनुभव नें व 2016 के बाद बीजेपी के प्रति वफादारी नें पहली बार इस चुनाव में केरल में बीजेपी की प्रथम विजय दीलाई। इस महत्वपूर्ण सफलता ने उन्हे पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय के रूप में मंत्री बनाया गया।[ix]

अरूण गोविल - रामायण टीवी सीरियल में राम की भूमिका व कुछ फिल्मों में किरदार निभाने वाले अरूण गोविल को मेरठ लोकसभा से बीजेपी के प्रत्याशी के रूप बनाया गया उन्होने समाजवादी पार्टी की सुनीता वर्मा को 10585 मतो से पराजित किया। गोविल के राम किरदार को बीजेपी ने भुनाने का प्रयास किया क्योकि इस समय राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा का चुनावी मुद्दा बना हुआ था लेकिन इसमें आंशिक सफलता मिली और वह प्रथम बार सांसद चुने गये।[x]

रचना बनर्जी - पश्चिम बंगाल की हुगली सीट पर मुकाबला रोचक रहा.। यहां पर बंगाली सिनेमा की दो अभिनेत्रियां आमने-सामने हैं. बीजेपी ने यहां से मौजूदा सांसद और अभिनेत्री लॉकेट चटर्जी को टिकट दिया है. वहीं, तृणमूल कांग्रेस ने अभिनेत्री रचना बनर्जी को मैदान में उतारा है। रचना बनर्जी ने 76853 मतो से विजय प्राप्त की। मिस कोलकता रही रचना बनर्जी पहली बार राजनीति में टीएमसी से चुनाव लड़ा। उन्होने अपने ग्लैमर व स्टारडम के आगे लाॅकेट बनर्जी के

स्टारडम को झाुका दिया । लाॅकेट बनर्जी ने टीएमसी से शुरूआत कर 2015 में बीजेपी में शामिल होकर महिला मोर्चा व महिला आयोग अध्यक्ष के रूप में कार्य किया 2016 व 2021 विधान सभा का चुनाव भी हार गई थी। 2019 में हुगली से सांसद बनी लेकिन इस बार भी जादू नहीं चल पाया।[xi]

दीपक अधिकारी - भारतीय बंगाली अभिनेता दीपक ने हिरनमाॅय चट्टोपाध्याय को 182868 मतो से हराकर घाटाल (पं. बंगाल) सीट से तीसरी बार विजय प्राप्त की 2014 व 2019 में भी वह विजेता रहे थे। संसद मे इनकी 12 प्रतिशत उपस्थिति रही लेकिन उन्होने घाटल के बाढ़ प्रभावित क्षैत्र पर खू ाब कार्य करवाया जिससे सकारात्मक माहौल बना। हिरनमाॅय चट्टोपाध्याय बंगाली अभिनेता है जो खड़गपुर सदर (पं. बंगाल) विधनसभा सदस्य है वे एनजीओ वाॅयस आॅफ वल्ड के लिए भी कार्य कर रहे है लेकिन लोकसभा में अपने व्यक्तित्व का जादू नहीं बिखेर सके।[xii]

शताब्दी राॅय - फिल्म अभिनेत्री 2009 से टीएमसी सांसद रही है ज्न्होने लगातार 2014, 2019, 2024 का लोकसभा चुनाव बीरभूम (पं. बंगाल) से चुनाव जीता है। इस बार देवतनु भट्टाचार्य को 197650 मतो से पराजित किया है। संसद मे केवल एक सवाल ही पूंछा लेकिन शताब्दी राॅय ने महिला अधिकारिता व सामाजिक न्याय और अधिकारिता के क्षैत्र में संघर्ष कर राजनीति में जगह बनाई है।[xiii]

सयोनी घोष - बंगाली फिल्म व टेलीविजन अभिनेत्री ने इस बार जाधवपुर (पं. बंगाल) लोकसभा से अनिबार्न गांगूली को 258201 मतो से हराकर संासद बनी है। इससे पहले 2021 में राजनीति में प्रवेश करके पं. बंगाल के आसनपोल दक्षिण चुनाव लड़ा लेकिन हार गई लेकिन अखिल भारतीय तुणमूल युवा कांगेस में पदधारी के रूप में सक्रिय रही उनका यह संघर्ष ही उन्हे यहां सफलता दिला पाया ।[xiv]

दिनेश निरहुआ - भोजपूरी फिल्मी स्टार ने 2019 में बीजेपी में शामिल होकर राजनीति में प्रवेश किया लेकिन आजमगढ़ से चुनाव हार गये 2022 में यहां से उपचुनाव में जीते और सक्रिय राजनीति का हिस्सा बने। निरहुआ की उपस्थिति संसद में लगभग 90 फीसदी रही। लेकिन वह अपने संसदीय क्षैत्र की जनता के साथ तारतम्यता नहीं बिठा सके और 161035 मतो से एसपी के धमेन्द्र यादव से चुनाव हा गये।[xv]

राजब्बर - कांग्रेस के दिग्गज नेता व अभिनेता इस बार गुरूग्राम से उम्मीदवार बनाये गये लेकिन बीजेपी के मजबूत नेता राव इन्द्रजीत सिह के सामने 75079 मतो से हार का सामना करना पड़ा। उनका प्रभुत्व कोई असर नहीं छोड़ पाया वे लगातर तीसरा चुनाव हारे है, क्योकि उनका कार्य कभी कभी विवादित व अस्थिर रहा है। उन्होने 1989 में जनता दल से राजनीति में प्रवेश किया था। 1994 से 1999 तक वह उत्तरप्रदेश से राज्य सभा के सदस्य रहे। 1999 2004 के आमचुनाव जीतकर आगरा से सांसद चुने गये। 2006 में समाजवादी पार्टी से निलम्बित किये गयें। 2008 में कांगेस मे शामिल हो गये 2009 में फिरोजाबाद सीट से उपचुनाव जीता। 2014 में गाजियाबाद से चुनाव हार गये। 2015 में उत्तराखण्ड से राज्यसभा में पहुंच गये। 2019 का आमचुनाव फतेहपुर सीकरी से लड़ेा लेकिन वह भी हार गये। राजब्बर की कार्यप्रणाली का विवादित रहना व जनता पर विशेष पकड़ न होने के कारण राजनीतिक में फ्लोप शाॅ शाबित हुआ। [xvi]

पवनसिंह - भोजपुरी सिनेमा के प्रसिद्ध गायक और अभिनेता पवन सिंह ने बिहार की काराकट लोकसभा सीट से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव में भाग लिया है। पहले उन्हें बीजेपी ने पश्चिम बंगाल की आसनसोल सीट से टिकट दिया था, लेकिन वे इससे इंकार करके निर्दलीय अखाड़े में उतरे। यहां वह सीपीआई के राजारामसिंह से 105858 मतो से पराजित हो गये। अपनी छवि भी अपने ही क्षैत्र में काम नहीं आई क्योकि वह भी अन्य भोजपुरी कलाकरो की तरह सीधे सफल होने का अनंमान लगा रहे थे लेकिन इसके लिए संशर्य व दलीय प्रतिबद्वता भी आवश्यक है।[xvii]

करमजीत अनमोल व हंसराज हंस - पंजाबी गायक करमजीत अनमोल प्रथम बार आप पार्टी के उम्मीदवार के रूप में भाग्य आजमाया लेकिन असफलता मिली।

गायक हंसराज हंस जनवरी 2009 में शिरोमणि अकाली दल में शामिल हुए और उसी वर्ष मई में उन्होंने जालंधर लोकसभा क्षेत्र से असफल चुनाव लड़ा । बाद में उन्होंने 18 दिसंबर 2014 को शिरोमणि अकाली दल से इस्तीफा दे दिया। 14 फरवरी 2016 में, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए और कुछ समय बाद में दिसंबर 2016 में, वे भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए । 2019 के आम चुनाव में वे उत्तर पश्चिम दिल्ली लोकसभा क्षेत्र से डा॔.उदितराज को हराकर सांसद चुने गए । 2024 के आम चुनाव में उन्होंने फरीदकोट लोकसभा क्षेत्र से असफल चुनाव लड़ा और पांचवें स्थान पर रहे।[xviii]

यहां से कांग्रेस के सरबजीत सिंह खालसा वह पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के पूर्व अंगरक्षक और हत्यारों में से एक बेअंत सिंह और रोपड़ निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाली पूर्व लोकसभा सांसद बिमल कौर खालसा के पुत्र हैं इस चुनाव में विजय रहे।

18 वीं लोकसभा के इस आमचुनाव में फिल्मी सितारों के बारे में निम्न बाते प्रकट हुई है।

प्रथम - पूर्व में फिल्मी सितारे दलीय प्रचार में भूमिका निभाते थे और दलीय कार्यक्रम के आधार पर प्रमुख संसदीय क्षैत्रों में फिल्मी अंदाज में चुनाव प्रचार करते थे । पहले राजनीतिक दलो का मानना था कि यह भीड़ जुटाऊ व उसे वोट में आसानी से बदलनें में सक्षम होते है। लेकिन इस बार सभी ने अपने लिए पार्टी विचारधारा के आधार पर ही चुनाव प्रचार किया।

द्वितीय - इस बार मुख्यतः दो राजनीतिक दलो ने ही फिल्मी सितारों को चुनाव टिकट देने में विश्वास किया। इसमे बीजेपी ने उन्ही उम्मीदवारों में विश्वास दिखाया जो उसकी विचारधारा के साथ क्षैत्र में सक्रिय व जिताऊ भी नजर आये। टीएमसी का मुख्य क्षैत्र पं. बंगाल रहा वहां उन अभिनेताओं को जगह दी गई जिन्होने अपने स्टारडम के साथ राजनीति में सक्रियता के रूप में नजर आये।

तृतीय - भोजपुरी, बंगाली व दक्षिण सिनेमा के सितारों के बारे में आम धारणा है कि सिनेमा में प्रसिद्वि होने पर ये राजनीति को भी साथ लेकर चलते है अर्थात पहले सिनेमा फिर राजनीति यह उनके कैरियर का भी हिस्सा बन गया है।

17 वीं लोकसभा में सांसद फिल्मी सितारों के कार्य अवलोकन किया जाये तो स्पष्ट होता है कि -

1.कई फिल्मी सितारे संसद की कार्यवाही में विशेष भाग नही ॅलिया लेकिन संसदीय क्षैत्र मे निरन्तर प्रयास करते रहे तो उन्हे पार्टी से टिकट व 18 वीं लोकसभा में जीत भी मिली। जैसे हेमामालिनी, शत्रुध्न सिन्हा आदि।

2.कई फिल्मी सितारे केवल अपने स्टारडम के भरोसे ही रहे तो उन्हे असफलता मिली जैसे गुरदासपुर से सन्नी देओल।

3.कई फिल्मी सितारे संसदीय कार्यवाही व संसदीय क्षैत्र में सक्रियता के रूप में रहे उन्हे मौका मिला और वे जितने में सॅल हुए।

4.कई फिल्मी सितारों ने विवादित रहकर कार्य किया जिससे उनकी छवि खराब हुई और उनके विरोध में माहौल बन गया और चुनाप हार गये। जैसे - राजबब्बर, दिनेश लाल निरहुआ।

5.कई फिल्मी सितारों ने सोशल मीड़िया गुरप के माध्यम से दलीय राजनीति को बढ़ाया और दल का विश्वास बनाये रखे उन्हे टिकट व सफलता मिली। जैसे कंगना रानोट

उपर्युक्त विष्लेषण के आधार पर स्पष्ट होता हैं कि फिल्मी सितारों की सटारडम व ग्लैमर छवि से हर बार चुनाव नहीं जीता जा सकता बल्कि राजनीति में सक्रिय रहकर दलीय निष्ठा, दल की विचारधारा के लिए संघर्ष, जनता के मध्यम में ख्याति को बनाये रखना व सक्रिय बना रहना पड़ता है तभी राजनीति मे सफल बने रहने की सम्भावना रहती है।

अतः चुनावी राजनीति में सिने कलाकारों की भूमिका तो उचित है लेकिन वह ग्लैमर के रुप में प्रयोग नही की जानी चाहिए। बल्कि सामाजिक कल्याण की प्रवृत्ति के आधार पर प्रयोग की जाये। अगर इसी तरह ग्लैमर पूर्ण भूमिकाओं के माध्यम से चुनावी राजनीति में सिने कलाकारों का प्रवेश होता है तो यह भारतीय लोकतंत्र के

लिए अव्यवस्था का प्रश्न होगा। क्योंकि लोकतंत्रीय व्यवस्था को ग्लैमर की नहीं जन कल्याण की जरुरत है। जन कल्याण ही लोकतंत्र के व्यवस्थित स्वरुप का आधार है।

ख् पाठक, दिनेश,महानायक से लेकर दक्षिण के सुपर स्टार तक, टीवी 9, 30 मार्च 2024

---

[i] पाठक, दिनेश,महानायक से लेकर दक्षिण के सुपर स्टार तक, टीवी 9, 30 मार्च 2024,

[ii] लोकसभा चुनाव में सेलेब्स का दबदबा दैनिक भास्कर ,नर्ददिल्ली,मई 2024,

[iii] लता, आशीष,च्ुानावी जमीन पर उतरे ये सितारे,प्रभात खबर,रांची 4 जून 2024,

[iv] लोकसभा चुनाव में सेलेब्स का दबदबा, दैनिक भास्कर नईदिल्ली, मई 2024

स्टार से संसद तक ईटीवी भारत एन्टरटेन्टमेन्ट 5 जून 2024,

शर्मा, आदर्श संसद में हिट व फ्लाॅफ रहे फिल्मी सितारे, डीडब्ल्यू न्यूज 09 अप्रेल 24,

[v] वही,

[vi] वही,

[vii] वही,

[viii] वही,

[ix] वही,

[x] वही,

[xi] वही,

[xii] वही,

[xiii] वही,

[xiv] वही,

[xv] वही,

[xvi] वही,

[xvii] वही,

[xviii] वही,